पद्मप्रभु जिन पूजन

स्थापना

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जयपद्मजिनेश्वर मेरे, पावन पद्माकर सुखधाम ।
भव दुखहर्ता, मंगलकर्ता, छठवें तीर्थंकर अभिराम।।
हरो अमंगल प्रभु अनादि का, भाव यही लेकर आया।
मन मंदिर है मेरा सूना, आह्वान करने आया।।
वीतरागसर्वज्ञहितैषी, पद्मजिनेश्वर प्रभु महेश।
पूजा को स्वीकारों स्वामी, दिखला दो मुक्ति का देश।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र अवतर अवतर संवौषट् आह्वाननम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्र ! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् सन्निधिकरणम्।

द्रव्यार्पण

(ज्ञानोदय छंद)

जन्म मरण की इस ज्वाला में, अब तक मैं जलता आया ।
सिंधु नीर से बुझी न ज्वाला, अतः भक्ति का जल लाया।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।1।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जन्म जरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।

भवाताप से व्यथित हुआ हूँ, अगणित दुख पाये स्वामी।
तप्त हृदय शीतल कर दो, संताप हरो अंतर्यामी।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय भवातापविनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।

नश्वरता में ही सुख माना, अक्षय पद ना जाना है।
दर्श आपका पाया जबसे, जिन पद पाना ठाना है।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।2।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।

इंन्द्रिय सुख के महाजाल में, भगवन् फँसकर तड़फ रहा।
मुझे बचा लो काम विषय से, तुम्हें छोड़कर जाऊँ कहाँ ।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।3।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।

तरह-तरह के व्यंजन खाकर, क्षुधान मन की मिट पाई
मन की इच्छाओं पर स्वामी, अब तक विजय नहीं पाई।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।5।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।

मोह महातम नाश हेतु, यह दीपक भेंट चढ़ाया है।
अंतर घट में हो उजियारा, ज्ञान ज्येति प्रकटाना है ।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।6।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोहांधकारविनाशाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।
पर परणति के नाश हेतु, यह धूप सुगंधित लाया हूँ।
अष्ट कर्म को जला जलाकर, धूम्र उड़ाने आया हूँ।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।7।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अष्टकर्मदहय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।
दुष्कर्मों के फल को भोगा, चतुर्गति में किया भ्रमण।
मोक्ष महाफल पाने भगवन्, आया तेरी चरण शरण ।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।8।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।
जल से फल का वैभव सारा,आज चढ़ाने आया हूँ ।
थ्नज अनध्य पद देना स्वामी, भाव संजोकर लाया हूँ।।
श्री पद्माकर पद्म जिनेशा, तव दर्शन कर हर्षाया।
आत्म शांति पाने को भगवन्, शरण तिहारी हूँ आया।।9।।
ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंचकल्याणक

(ज्ञानोदय छंद)

माघ कृष्ण षष्ठी के शुभ दिन, हुआ गर्भ कल्याण महान।
पंद्रह मास रतन बरसाये, किया सुरों ने मंगलगान।।
उपरिम ग्रैवेयक से आये, मात सु सीमा हर्षाई।
धरणराज की शुभ नगरी में, अतिशय खुशियाँ हैं छाईं ।।1।।
ॐ हीं माघकृष्णषष्ठयां गर्भमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
कार्तिक कृष्णा तेरस के दिन, त्रिभुवन में आनंद हुआ।
कौशांबी नगरी में आकर, देवों ने जयगान किया।।
मेरु सुदर्शन पांडुक वन में, हर्षित हो अभिषेक किया।
सुराङ्.नाओं ने प्रभु आगे, थिरक-थिरक कर नृत्य किया।।2।।
ऊँ हीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां जन्ममंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
जाति स्मरण जब हुआ प्रभु को, कार्तिक कृष्ण त्रयोदश थी।
लौकांतिक देवों ने आकर, तप संयम की अर्चा की।।
पù्रभ ने मुनिव्रत धारा, जिन पद से अनुराग किया।
पर तत्त्वों से चित्त हटाया, जग वैभव को त्याग दिया ।।3।।
ऊँ हीं कार्तिककृष्णत्रयोदश्यां तपोमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
चौत्र शुक्ल की पूर्णमासी थी, चार घाति अवसान किया।
पाकर केवलज्ञान प्रभु ने, भव बंधन का नाश किया।।
सप्त तत्त्व का समवसरण में, किया प्रभु सुंदर उपदेश।
षट् द्रव्यों के प्रभु प्रणेता, जय-जय जयप्रभु पद्म जिनेश।।4।।
ऊँ हीं चौत्रशुक्लपूर्णिमायां केवलज्ञानप्राप्ताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी के दिन, अष्ट कर्म का नाश किया।
मोहन कूट सम्मेदाचल से, सिद्धालय में वास किया।।
अंतिम शुक्लध्यान धरकर जब, ऊर्ध्व लोक में किया गमन।
सादि अनंत सिद्ध पद पाया, भव्य जनों ने किया नमन।।5।।
ऊँ हीं फाल्गुनकृष्णचतुथ्यां मोक्षमंगलमंडिताय श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमो नमः।

जयमाला

दोहा

पदम चिन्ह् शोभित चरण, नमूँ अनंतों बार।
प्रभु कृपा हो भक्त पर, करें भवाम्बुधि पार।।1।।

(ज्ञानोदय छंद)

जय-जय पद्मप्रभ जगनामी, आप सर्व जग हितकार।
शरण आ गया नाथ आपकी, दुःख सह रहा अति भारी।
बहु आरंभ परिग्रह से प्रभु, नरक गति में जा पहुँचा।
दुःख सहे अनगिनती स्वामी, वचनों से नहीं जाए कहा ।।2।।
वैतरणी में गिरा कभी तो, सेमर तरु असि धार ने।
क्षुधा तृषा से व्यथित हुआ औ, शीत उष्ण के दुःख सहे।।
राग भाव से अपना माना, वो ही वैरी बने वहाँ।
आर्तध्यान से मरकर स्वामी, पशु गति में जा पहुँचा।।3।।
एकेन्द्रिय भी कभी बना तो, दुष्कर्मों का बोझ सहा।
देव गति भी पाकर भगवन्, विषय भोग में मस्त रहा।।
प्रभु पूजन भक्ति नहीं कीनी, पर परिणति में भटक गया।
दुर्लभ नर तन पाकर प्रतिपल, कर्म फलों में अटग गया।।4।।
प्रभु आपने जग वैभव को, हेय जानकर ठुकराया।
आत्म साधना के साधन से, परम शुद्ध पद को पाया।।
भव्य जनों को समवसरण में, वस्तु तत्त्व का ज्ञान दियां
है अनंत उपकार आपका, परमातम का ज्ञान दिया।।5।।
एक शतक ग्यारह थे गणधर, उनको भी मैं नमन करूँ।
साम्य भाव धर उर अंतर में, राग-द्वेष का हनन करूँ।।
पद्म जिनेश्वर आप कृपा से, शरण तिहारी आया हूँ।
बालक पर उपकार करो प्रभु, तुम सम बनने आया हूँ।।6।।
नाथ आपने भूले भटके, भव्यों को शिव द्वार दिया।
सिद्धालय की आशा लेकर, मैं भी चरण शरण आया।।
बाल सूर्य सम वर्ण आपका, पù्रभ जिनराज महान।
जयमाला अर्पण करता हूँ, नर जाऊँ मैं भी निर्वाण ।।7।।

ॐ ह्रीं श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय जयमाला पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

घत्ता

श्री पद्म जिनेशा, नमित सुरेशा, भव-भव का संताप हरो।
निज पूज रचाऊँ, ध्यान लगाऊँ, 'विद्यासागर पूर्ण' करो।।

।। इत्याशीर्वादः।।